पद २३७ (राग: झिंजोटी - ताल: त्रिताल) हरी न ये रुसला कां गे।।धु.।। कंटाळुनी मसी वीट धरुनि मनीं।

क्रोध हृदयीं घुसला कां गे।।१।। कंवटाळीन कोणी कवटाळिलें

त्यासी। तिचे घरी वसला कां गे।।२।। बोधिलें असें कोणी

माणिकप्रभुजीसी। बोध तिचा ठसला कां गे।।३।।

